International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 721-723

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 721-723
www.allresearchjournal.com
Received: 13-02-2017
Accepted: 14-03-2017

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ग्राम+पो.–भैंसवार, जिला–सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी
ग्राम+पो.–भैंसवार, जिला–सतना, मध्य प्रदेश, भारत

अनूप अशेष का काव्य नाटक–अंधी यात्रा

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

सारांश
अनूप अशेष का काव्य नाटक 'अंधी यात्रा' में अपराध के राजनीति पर छा जाने की त्रासदी के उत्स तक सार्थकता में पहुँचता है। आंखों पर पट्टी बांधे गांधारी पुत्र घर–समाज–देश और जनता के बीच जो नित नये नाटक रचते है, उनसे यवनिका ही नहीं उठाता–उस मंच पर मानव चेतना की जागृति का संसार भी रचने को सचेष्ट है। इस रचना का आकलन जीवन के काव्यात्मक उत्कर्ष के संभावना के अनंत आकाश पर कर रहे है। अनूप अशेष का काव्य नाटक अंधी यात्रा में इसी सत्य का रचनात्मक स्वीकार है। उनकी यह रचना एक श्रेष्ठ साहित्य संग्रह है। अशेष जी हिन्दी के प्रतिष्ठित नवगीतकार है। उनके गीत देश की शीर्शस्थ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और देश–भर में वे कवि के रूप में सहजता से जाने गये है। पर उनका यह काव्य नाटक के प्रकाशन में कुछ समय व्यर्थ गया है। अंधी आँखो से सत्ता की देवी के पूजन–दर्शन की सफलता ने इस दश के सांस्कृतिक सामाजिक जातीय प्रसंगों को आदमी की अनुभूतियों से उसके उत्स से काटने की खूब कोशिश की है। इन्ही प्रवृत्तियों का सामना करती यह कृति एक आईना है जिसमें मुखौटे वाले व्यवस्थावादी अपनी सूरत देख सकते है। समयांतरता के बाद प्रकाशन का कुछ कारण यह हो सकता है। उसमें सत्ता के वर्णित चरित्र का आख्यान भी हो सकता है।

कूट शब्दः अनूप अशेष, अंधी यात्रा, सांस्कृतिक सामाजिक

प्रस्तावना
आज इतिहास भी हमारा साथ नहीं दे पा रहा है–यह कवि की चिन्ता है–पर इस चिंता को दर किनार का वह अंधी यात्रा में उतर पड़ता है जिसमें जीवित लाशें उसकी सहयात्री है–जिनमें वह कहते हुए चल रहा है–मौत के डर से नाटक परेशान है–आप जिंदा कहाँ है जो मर जायेंगें।
लेकिन इसके लिए हमें सबसे पहले मुकाम–ए–दिल समझने की जरूरत होगी इसलिए कि आजादी के बाद हिन्दी कविता दो ध्रुवों पर केंद्रित हो गई। एक ध्रुव वह जहाँ पर इनाम इकराम है। प्रशस्ति वाचन के लिए पेशेवर आलोचक है। निःसंदेह इनके विचार बहुत ऊँचे हैं। कलात्मकता प्रखर है लेकिन ये गूँगे का गुड़ है। इसके न पाठक है न श्रोता। बड़े–बड़े महारथी दिग्गज इनके आगे घुटने टेकते हुए अपनी काव्य कला की प्रेरणा प्राप्त करते है। कविता–कविता की जगह पेशा हो जाती है। इनके लिए पुरस्कार नहीं है। प्रशस्ति वाचन के लिए पेशेवर आलोचक नहीं है। सत्ता और समाज इसे मान्यता नहीं देता। यह ढोंग लगातार है। लेकिन इन कवियों के पौ–बारह है और इन्हें सब ढकोसलों की कोई कामना नहीं रहती। उनके लिए कविता की कीमत अय्याश जिंदगी से चुक जाती है।
अनूप अशेष का काव्य नाटक 'अंधी यात्रा में' ऐसी ही रचना है जिसमें यह जीवित स्वीकार है। सब अपने से जुड़े दूसरों के कट गये हैं। भाडे–स्वार्थ–गली–लिप्सा में बंट गये है। जहाँ ईमान बंदी है। ममता खून के आंसू रो रही है। नई पीढी विद्रोह के नाम पर आत्मकेंद्रित अय्याशी में जी रहे है। बुद्विजीवी स्वत्वहीन हैं और अधिकारी नेताओं की चालबाजियों के और नेता अधिकारियों की चालबाजियों के शिकार होते है। सामान्यजन जिसे कहा जाता है उसका चित्र यह है।

'हम भूखे हैं मांग की पूर्ति है।
शव हैं
पराजय है। हाकिम
पटवारी की घूस है।
मुकदमें है।
हम सब नहीं है।
तो बस केवल आदमी।'

और संतरी भी है जो सिर्फ नाम का है। मिट्टी की मूरत है। सब कुछ देखती है। बिसूरती है। औरत बाजार में बिकने के लिए खडी है। सब कुछ बाजार है। खुला बाजार है। जहाँ हर वस्तुएं बिकती है। कहो जी तुम क्या–क्या खरीदोगे।
उर्दू के गीतकार साहिर लुधियानवी के क्या–क्या खरीदोगे ? में जो व्यग्य हैं वह अध्यात्म है। क्या–क्या खरीदोगे– औकात पुँछने और औकात बतलाने वाली अदा है। कौन क्या ख्रीद सका है। बिकने से कौन बचा है। सब कुछ माटी मोल बिका है।
अनूप अषेष जी की अंधी यात्रा में सब कुछ बाजार में बिक रहा रहा है और कोई बडा आवरण नहीं है। बिकने की बेताबियां है। और बिकी हुंई सूरतों की छटपटाई है। इस खरीद फरोख्त के खिलाफ काव्य का वह छाया पुरूष है जो सवाल करता है। वह सवाल जिसका उसे जवाब नहीं चाहिए।

'पानी दार लोग क्या व्यवस्था का बलिष्ठ मुक्का उनकी पीठ से होकर पेट के बाहर तक नहीं घुसा।'

नहीं वह नेता सुखी नहीं है जिसे मालुम है कि वह नेता के होने लायक नहीं है। अपराध खुद अपनी सजा तलाष लेता है। सारी दुनिया कहती है कि आप ईमानदारी है लेकिन आपको मालुम है कि आप चोर है। इससे बढकर न कोई सत्ता होती है न कोई सबूत होता है यह व्यंग्य ही अध्यात्म है।
इसी को लोकोक्ति में कहते है। पाप मगरे में चिल्लाता है। पानी पर उतराता है। इस प्रवंचना को अंधी यात्रा में मूर्त रूप देना अनूप अषेष की उस विषेष विचारधारा का प्रभाव है जिस पर आज भी अटूट विष्वास है और जो विचारधारा किसी मूर्ति से सीधे जुडी हुई है। वह विचार मूर्ति जिसने नौजवानों की एक समूची पीढी को प्रभावित किया और जिसने अपने विचार पौरूष से अनेक बौद्विक मानसपुत्रों का सृजन किया–जिन्होने वैचारिक चिंतन को सदैव गतिषील होने की अवधारणा से जोडकर स्वीकार करने की सत्यता का सामना किया। इस काव्य नाटक में कवि की यह विचार मूर्ति भी पात्र बनकर खडी है। और किसी एक पात्र में नहीं, कहीं न कहीं लगभग हर पात्र में इसकी मर्म छबियॉ दिखलाई पडती है। आरंभ संतरी के इस उद्घोष के साथ ही होता है –

'लगता है अब लोकतंत्र की मृत्यु हो गई और.....
लाश को मोह बिद्व सी गांधी की आत्माएं ढोती है।'

राम मनोहर लोहिया की विचार मूर्ति का स्पष्ट् स्वीकार काव्य नाटक के आरम्भ में ही लेखक श्रद्वापूर्वक करता है तो यह महज औपचारिकता नही है। उसकी अनुगुंज अनुराग स्वीकृति है।
कवि अनूप अषेष जी ने हर पात्र को विचार पात्र बना दिया है। यह बात उसे उत्तरी ध्रुव पर खडे उन नये कवियों से जोडती है जो साहित्यिक स्वीकृत महामहिम है लेकिन उसकी रागात्मक रचना की मंत्रविद्व आनन्दवाहिनी जन सामान्य का आस्वाद उद्घोष नहीं बनती। इसीलिए वे दक्षिणी ध्रुव के साथ संगीत तक नहीं पहुंचते, जहां जन स्वीकृति की पयस्विनी प्रवाहित होती हैै। हर बडे कलाकार ने इस बात को किसी न किसी रूप में कहा है कि कलाकार को खुद चलकर अवाम तक जाना चाहिए। खुद को खुदा समझना अहंकार है, घमण्ड है– स्वाभिमान नहीं है।
अनूप अषेष जी इस अंधी यात्राा में इस अहंकार से टकराते–टकराते चूक जाते है। और उस षिल्प का संधान नहीं कर पाते–जिसका आकर्षण सामान्य जन को तत्काल बांध लेता है। वे खुद ही बार–बार उस दरवाजे पर दस्तकें देते है। और खुद ही उसे नहीं खुलने देते। यह अपनी पहचपने के टूट जाने का भय कवि को चारदीवारी को नहीं लोधने देता –जहां अनंत संभावनाओं का संसार प्रतीक्षातुर निहार रहा है। तब हम अनूप अषेष के ही एक गीत के चंदषब्द याद आ जाते है।–

'कुंए में ठहरा हुआ सूखा पियासी गाय बंधु।
खुलकर नहीं कहते है।'

यदि इस अंधी यात्रा में अनूप को अपने कवि सार्थकता का साह्चर्य लाभ न मिला होता तो उसको उसी तरह के उत्तेजित प्रचार के रूप में हम पहचानते जिस तरह अनेकानेक नुक्कड नाटक पहचाने गये और पहचान एक राजनीतिक–वैचारिक पक्षधरता में कैद हो गई। वह कैद जिसमें बकौाल गालिबि 'आराम बहुत है' जिसकी प्रतिध्वनि अंधी यात्रा में इन षब्दों में सा् है –

'कोरे आदर्षो का खोल फेंक दिया मैंने कब का कबाडखाने में।'

अब एक दम खुल्मखुल्ला है। कहीं कोई हलचल नहीं है। इसलिए कि सत्ता ने सबके भीतर पराई चुपडी देखकर ललचाने का सपना जगा दिया है। तो सत्ताधारी निष्कंटक है। अब न तीर कमान में है। न किसी विद्रोह का भय क्योंकि सब अपने लालच की कैद में बहुत आराम महसूस कर रहे है।

'सत्ता का चरित्र नंगा हो या ढका हो फर्क नहीं पडता कुछ।
अधिकारों के पीछे दौडी है प्रजा सदियों से इसके रहते
निष्कंटक हैं हम।'

कवि एकदम स्पष्ट् है कि इस मामले में कि हम इन अधिकारों की होड से जिसने हमें अंधी दौड में षामिल कर दिया है। खुद को बचाना ही होगा। जब तक यह नही, तब तक निष्कृति नहीं। यह अंधी दौड हमें जहां ले जायेगी उसका स्पष्ट आकलन काव्य नाटक के अंत में संतरी करता है।

कर्ज के धुएं में लिपटा देश।
सस्ते माल सा बिकेगा, व्यवस्था की संदली, भुजाओं में
नपुंसक सा फिसलेगा समय की अंधी यात्रा के नाम पर।'

लेकिन तब भी समापन यहां नहीं होता और यही कविदृष्टि की सार्थकता है कि वह समापन के लिए फिर अपने अन्तःकरण के छाया पुरूषों की ओर निहारती है जो उद्घोष करता है –

'पैबंद लगाकर जीने से मरना अच्छा, मुंह के रहने मौन, हाथ हके रहते लूले, सह–सहकर मरने से, साथी लडना अच्छा।'

रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था–'तुम स्वयं–मरण के मुख पर चरण धरो रे–जीना है, तो मरने से नहीं डरो रे।' जिसे फिराक ने कहा–'मौत इस गीत रात गाती थी, जिंदगी झूम–झूम जाती थी।' अपराधियों की जमात में बदल गई सत्ता के खिलाफ होकर कवि आदमी की अपनी चेतना की जागृति के पक्ष में खडा हो सकता यह उसकी रचनात्मक उपलब्धि है। यह उपलब्धि अपनी सार्थकता जन सरोकार की सीधी संगति में ही पा सकती है।
'इस अमूल्य पुस्तक का महत्व समाज एवं राष्ट्र के लिये बहुत है। कवि ने देश की चरमराई व्यवस्था की ओर संकेतात्मक साहित्य की रचना की है जिसमें अधिकांष लोग इसके अध्ययन से वास्तविकता से परिचित हो एवं समाज की संवेदना की अनुभूति करें।'
अनूप अषेष जी का यह काव्य नाटक' अंधी यात्रा में' राजनीति–समाज और लालच का त्रिकोण सामने रखकर हमें झकझोरता है और इस बात के लिये प्रेरित करता है कि हम मक्खन के डिब्बों में बंद अपनी लालसाओं को मुक्त करें– इज्जत पेट उपाधि पर आदर्षो के जूते झेलकर जीने से बाज आएं –वर्ना पूजा की चौकी पर अधनंगी–सम्भोगित–युवती की चाटी हुई देह

पडी रहेगी और मूक दर्षक बनकर उसे देखते रहने के लिए अभिषप्त रहेंगे।

'अंधी यात्रा में' अनूप अषेष का एक काव्य नाटक है जो वर्तमान युग की स्वार्थपरक प्रवृत्ति का चित्रण काव्यात्मक शैली में करता है तथा प्रयोगों की दृष्टि से अभिव्यक्तियों में नवगीत के तेवन लिए हुए है

'यह न्योती हुई भूख है।
देश बलात्कार की पीडा से छटपटा रहा है।
कुर्सी व्यभिचार की अवैध उगी ईख है।'

'अंधी यात्रा में' में एक खतरनाक प्रयोग के रूप में ही लिखा गया। अंधी यात्रा किसी एक देश में नहीं, पूरी दुनिया के एक बडे भूखण्ड में बसे छोटे–छोटे महादेशों में एक सी हो रही है। आंखों में पट्टी बांधे गांधारी पुत्र घर,समाज, देश और जनता के बीच नए–नए नाटक कर रहे है। सही आदमी अनके नाटकों को झेल रहा है। यह कृति समाज की नकली आधुनिक अचार–संहिता व छोटे–छोटे स्वार्थ और कुर्सी की अंधी दौड में आगे निकल जाने की मानसिकता को अपने कथा सूत्रों में पकडती है। वर्तमान युगीन यथार्थ के कलुषित स्वरूप का रूपायन करते हुए रचनाकार ने मूल्यहीनता, स्वार्थवृत्ति, उपभोक्तावादी संस्कारों और सामाजिक चेतना के विकृत रूप का काव्यात्मक चित्रण किया गया है।

नाटक का आरंभ छोटे से मंच निर्देषन के लिए बाद पुरूष–छाया के संवाद से होता है। पुरूष छाया कहती है–

'वर्तमान और भविष्य /के सारे आदिम जंगल
हम में समाहित हैं।/ और इन्हीं के बीच खुली है।
हमारी पीठ। सडक सी।/ अंधी यात्रा के
समय–पात्र सभी/ जीवित होकर करते है अभिनय।

इस प्रकार से अंधी यात्रा अनूप अषेष का अनोखा काव्य नाटक है जिसमें विषेष प्रकार के प्रेरणादायी प्रंसगों का मंचन किया गया है। जो आज के समय में देश के सापेक्ष में पूर्णतः दृष्टिगोचर है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अंधी यात्रा में–(काव्य नाटक)–अनूप अषेष।